वैज्ञानिक साहस के लिए पुरस्कार

जॉन मैडॉक्स की स्मृति में स्थापित यह पुरस्कार इस वर्ष दो ऐसे व्यक्तियों को दिया गया है जिन्हें वैज्ञानिक मूल्यों को महत्त्व देने के लिए हिंसा, हत्या की धमकियों और मुकदमों का सामना करना पड़ा था। पुरस्कार पाने वालों में बेजिंग निवासी शी-मिन फैंग और किंग्स कॉलेज लंदन के साइमन वेसले शामिल हैं।

यह पुरस्कार नेचर के भूतपूर्व संपादक जॉन मैडॉक्स की स्मृति में स्थापित किया गया है और ये दो व्यक्ति इस पुरस्कार को पाने वाले प्रथम व्यक्ति हैं। जॉन मैडॉक्स पुरस्कार *नेचर* पत्रिका और *सेंस अबाउट साइन्स* नामक संस्था द्वारा संयुक्त रूप से दिया जाएगा। पुरस्कार तीन तरह के कामों के लिए दिया जाएगाः

• विज्ञान व चिकित्सा के क्षेत्र में गुमराह करने वाली जानकारियों का जवाब देना,

• सार्वजनिक या नीति सम्बंधी बहसों में उपयुक्त प्रमाण प्रस्तुत करना, और

• लोगों को पेचीदा वैज्ञानिक मुद्दों की समझ बनाने में मदद करना।

गौरतलब है कि जॉन मैडॉक्स 22 वर्षों तक *नेचर* के संपादक रहे थे और वहां से सेवानिवृत्त होने के बाद जीवनपर्यंत वे *सेंस अबाउट साइन्स* के ट्रस्टी रहे। मैडॉक्स का निधन वर्ष 2009 में हुआ था। मैडॉक्स विज्ञान और वैज्ञानिक मूल्यों के प्रबल पक्षधर थे और एक संपादक व लेखक के रूप में उन्होंने विज्ञान की समझ को बढ़ावा देने का काम किया।

शी-मिन फैंग का तखल्लुस फैंग ज़ाउज़ी है और वे एक जैव-रसायन शास्त्री हैं मगर उन्होंने पत्रकारिता को अपना पेशा बनाया है। पत्रकारिता के अपने काम के दौरान उन्होंने चीन में चिकित्सा के क्षेत्र में चल रही धांधलियों का पर्दाफाश किया। इसके एवज में उन पर जानलेवा हमले हुए और उन पर कई झूठे मुकदमे थोप दिए गए।

दूसरी ओर साइमन वेसले को यह पुरस्कार मनोचिकित्सा में उनके काम के लिए दिया गया है। साइमन वेसले वे व्यक्ति हैं जिन्होंने जीर्ण थकान तकलीफ (क्रॉनिक फटीग सिंड्रोम) और खाड़ी युद्ध तकलीफ (गल्फ वार सिंड्रोम) पर काफी क्रांतिकारी काम किया और आलोचना के शिकार बने। उनका प्रमुख योगदान यह रहा कि क्रॉनिक फटीग सिंड्रोम और गल्फ वार सिंड्रोम दोनों को ही वे वास्तविक समस्याओं के रूप में स्थापित कर सके और उनके लिए उपचार के तौर-तरीके विकसित कर सके। ***(स्रोत फीचर्स)***